12. दूध एवं दुग्ध उत्पाद विपणन

उत्पादित दूध के विक्रय की राज्य में विभिन्न संभवनाएं हैं। सामान्यतः दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद विपणन राज्य के जन सामान्य उपभोक्ताओं के साथ-साथ तीर्थ यात्रियों, तीर्थ यात्रा मार्गों, पर्यटकों/सैलानियों, तथा मरीजों को किया जाता है। इस हेतु असंगठित क्षेत्र में मैदानी क्षेत्र में अनेकों दुग्ध व्यापारी/डेयरियां क्रियाशील हैं, जो गांव स्तर से दूध का उपार्जन करके अस्वच्छ कर वातावरण में दुध एवं दुग्ध पदार्थ तैयार करके उनका विपणन करते हैं। इस स्थिति के निराकरण हेतु सहकारी क्षेत्र में राज्य के सभी जनपदों में ग्रामीण क्षेत्र में दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियों जनपद स्तर पर जिला दुग्ध उत्पादन सहकारी संघ और प्रदशे स्तर पर उत्तरांचल सहकारी डेयरी फेडरेशन का गठन हुआ है/हो रहा है, जिनके माध्यम से पूर्णतः पाश्चराइज्ड दूध एवं दुग्ध पदार्थ विपणन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है, जिसका प्रसार धीरे-धीरे राज्य के समस्त ग्रामों में किया जाना है। मार्केटिंग पद्धति को और व्यापक करने के उधेश्य से शासन के प्रयास से राष्ट्रीय डेयीर विकास बोर्ड एवं उत्तरांचल सहकारी डेयरी फूड्स लि0 संस्था का संगठन किया है, जिनके द्वारा दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों के विपणन का कार्य हाल में ले लिया गया है, इससे राज्य को महत्वपूर्ण लाभ यह होगा कि Lean Season में जब दूध की कमी होती है, राष्ट्रीय मिल्क ग्रिड के माध्यम से प्रदेश के उपभोक्ताओं को उनकी आवश्यकता के अनुरूप दूध एवं दुग्ध पदार्थ मिलता रहेगा और Flush Season में जब दूध अधिक होता है, तो उसे मदर डेयरी द्वारा नेशनल मिल्क ग्रिड के अन्तग्रत ही लिया जायेगा। इस प्रक्रिया से जहां राज्य के उपभोक्ताओं को वर्ष भर तरल दूध एवं दुग्ध पदार्थ आवश्यकतानुसार उपलब्ध होगा वहीं ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों को उनके द्वारा उत्पादित दूध का समुचित मूल्य उन्हें मिलेगा।